



Kaal Bhairav Jayanti

भगवान शिव के रौद्र रूप काल भैरव (Kaal Bhairav) की जयंती हर साल मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाई जाती है। काल भैरव जयंती के दिन ब्रह्म योग बन रहा है।

काल भैरव जयंती की तिथि

वैदिक पंचांग के अनुसार, इस बार अष्टमी तिथि का आरंभ **22 नवंबर** को शाम 6 बजकर 7 मिनट पर होगा और इसका समापन **23 नवंबर** दिन शनिवार को सुबह 7 बजकर 56 मिनट पर होगा। ऐसे में **2024** में काल भैरव जयंती **22 नवंबर** दिन शुक्रवार को मनाई जाएगी।

काल भैरव जयंती का महत्व

इसी दिन भगवान शिव के स्वरूप कालभैरव का जन्म हुआ था। जब उनकी माता सती ने उनके पिता राजा दक्ष के यज्ञ में अपनी बलि दे दी, तो भगवान शिव बहुत क्रोधित हुए और दक्ष को दंडित करने के लिए काल भैरव (Kaal Bhairav) का रूप धारण किया। काल भैरव ने राजा दक्ष को भगवान शिव का अपमान करने और सती के आत्मदाह के लिए दंडित किया।

काल भैरव की पूजा करने से नकारात्मकता और बुरी शक्तियां खत्म हो जाती हैं। ग्रह दोष, रोग और मृत्यु का भय भी दूर हो जाता है।

कालभैरव का व्रत रखने के फायदे

भैरव को भगवान शिव का गण बताया गया है जिनका आवागमन का साधन कुत्ता है। कालभैरव व्रत करने से सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। बटुक भैरव और काल भैरव (Kaal Bhairav) के रूप में भैरव की पूजा बहुत लोकप्रिय है। अगर हम अन्य तांत्रिक साधनाओं की बात करें तो हम भैरव के आठ रूपों की पूजा के बारे में बात कर रहे हैं। इनके रूप हैं असितांग भैरव, रुद्र भैरव, चंद्र भैरव, क्रोध भैरव, उन्मत्त भैरव, कपाली भैरव, भीषण भैरव, संहार भैरव। इस दिन व्रत करने वाले साधक को पूरे दिन “ॐ कालभैरवाय नमः” का जाप करना चाहिए।

[काल भैरव अष्टक](#)

[कालाष्टमी](#)

संपूर्ण व्रत विधि

- भगवान शिव की पूजा से पहले हमेशा भैरव की पूजा का विधान है। कालाष्टमी के दिन कालभैरव और मां दुर्गा की पूजा करनी चाहिए।
- रात्रि के समय माता पार्वती और भगवान शिव की कथा सुनें।
- कहानी सुनने के बाद गुड़ का आयोजन करें।

काल भैरव के पूजन से भूत-प्रेत बाधा का नाश

काल भैरव को भगवान शिव के रौद्र रूप का अवतार माना जाता है। ऐसा माना जाता है कि वह स्वयं काल का अवतार हैं। इनकी पूजा से व्यक्ति अकाल मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार मार्गशीर्ष या अगहन माह के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को काल

भैरव का अवतार हुआ था। इस दिन को काल भैरव (Kaal Bhairav) जयंती के रूप में मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन काल भैरव की पूजा करने से तंत्र, मंत्र और भूत-प्रेत जैसी बाधाओं का नाश होता है। इस दिन व्रत रखना चाहिए और विधि-विधान से काल भैरव (Kaal Bhairav) की पूजा करनी चाहिए।

भगवान भैरव की पूजा से जुड़े कुछ उपाय

- काल भैरव जयंती के दिन भगवान भैरव के मंदिर में जाकर विधि-विधान से पूजा-अर्चना करनी चाहिए। ऐसा माना जाता है कि इससे भगवान शिव प्रसन्न होते हैं और अच्छे परिणाम मिलते हैं। इस दिन भैरवनाथ मंदिर के सामने दीपक भी जलाए जाते हैं। ऐसा करने से भगवान महाकाल अपने अनुयायियों को अकाल मृत्यु से बचाते हैं।
- भगवान भैरव, जिन्हें काशी के कोतवाल भी कहा जाता है, का आशीर्वाद पाने के लिए पूजा के दौरान उन्हें फूल, फल, नारियल, पान के पत्ते, सिन्दूर आदि चढ़ाना चाहिए।
- जो लोग शादीशुदा हैं उन्हें सुख-समृद्धि के लिए काल भैरव (Kaal Bhairav) की पूजा करनी चाहिए। ऐसा करने के लिए, भैरव जी के जन्मदिन की रात को शमी के पेड़ के नीचे सरसों के तेल का दीपक जलाएं। इससे आपके रिश्ते में प्यार बढ़ेगा।
- भगवान भैरव का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए उनके मंत्रों "ओम काल भैरवाय नमः" और "ओम फ्रीम बटुकाई मम आपति उपधारानै, कुल कुरु बटुकाई बम रीम ओम फट् स्वाहा" का जाप करें। भगवान भैरव की पूजा में उनके यंत्रों का भी बहुत महत्व है। ऐसी स्थिति में श्रीभैरव यंत्र को पवित्र विधि के अनुसार अर्पित करें।
- चूंकि काल भैरव (Kaal Bhairav) भगवान महादेव का ही रूप हैं इसलिए इस दिन शिवलिंग की पूजा करना भी शुभ माना जाता है। ऐसी स्थिति में बुलांठ प्रार्थना में 21 अंगूर के पत्तों पर चंदन से "ओम नमः शिवाय" लिखें और इसे [शिवलिंग](#) पर चढ़ाएं।

Read More Religious Content on

[Vedic Prayers](#)